मिशन जीवन ज्योति
Mission Jeevan Jyoti

बेक्रूम - कोरोना वालनटियर्स
Backroom - Corona Volunteers

रिपोर्ट Report

राष्ट्रीय सेवा योजना
National Service Scheme

डॉ. सरिता जैन
कार्यक्रम अधिकारी
राष्ट्रीय सेवा योजना

डॉ. भावना रमैया
कार्यक्रम अधिकारी
राष्ट्रीय सेवा योजना

डॉ. अर्पणा चाचोंदिया
कार्यक्रम अधिकारी
राष्ट्रीय सेवा योजना

आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्राकोष्ठ

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर

प्राचार्य की कलम से....

कोरोना वायरस आज भारत सहित दुनिया भर में स्वास्थ्य और जीवन के लिए गंभीर चुनौती बनकर हम सबके सामने है। वैश्वीकरण के इस दौर में जहाँ आवागमन और संचार व्यवस्था सुगम हुई है, वहीं आपसी संपर्क बढ़ने से पूरा विश्व गंभीर बीमारी से सुभेद्य हो गया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस महामारी से बचाव हेतु गाइडलाईन एवं परीक्षण के प्रोटोकॉल जारी किया, जिससे संक्रमण से बचा जा सके। इसी उद्देश्य के साथ स्थानीय स्तर पर जनसमूह को कोरोना के संक्रमण से बचाव हेतु जागरूक करने के लिए हमारे महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की तीनों इकाई की छात्राओं ने ग्रामीण क्षेत्रों का भ्रमण कर मास्क, भोजन का वितरण कर ग्रामवासियों को वैक्सीन लगवाने के लिए प्रेरित किया। जागरूकता अभियान में महाविद्यालय की छात्राओं ने राष्ट्रीय सेवा योजना के अधिकारियों के मार्गदर्शन में ग्रामवासियों को कोरोना बीमारी से बचाव एवं वैक्सीन लगवाने की महत्व समझाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन किया।

महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी एवं छात्राओं के इस प्रेरणास्पद कार्य की मै सराहना करता हूँ।

डॉ. बी.डी. अहिरवार

प्राचार्य

राष्ट्रीय सेवा योजना
National Service Scheme

कोविड-19 की लहरें : एक विश्लेषण

कोरोना महामारी: एक अध्ययन

निकिता मिश्रा बी.बी.ए., द्वितीय वर्ष

1. प्रस्तावना

लॉकडाउन अर्थात तालाबंदी इसके तहत सभी को अपने–अपने घरों मे रहने की सलाह दी गई है। जिसका सरकार की तरफ से कड़ाई से पालन भी करवाया जा रहा है। यह इसलिए जरूरी है, क्योंकि कोरोना वायरस नामक महामारी मानव जाति के इतिहास में पहली बार आई है।

अब पूरा देश इस वायरस से लड़ने के लिए अपने–अपने घरों में कैद हो गया है। इस महामारी के प्रकोप से लाखों लोग अपनी जान गंवा चुके हैं और इससे बचने का सिर्फ एक ही रास्ता है और वो है सोशल डिस्टेंसिंग यानी कि सामाजिक दूरी। यह संक्रमण एक से दूसरे इंसान तक बहुत तेजी से फैलती है जिसके कारण भारत सरकार ने लॉकडाउन को ही इससे बचने के लिए आवश्यक कहा है।

अर्थात लॉकडाउन एक आपातकालीन व्यवस्था है जो किसी आपदा या महामारी से वक्त लागू की जाती है। जिस इलाके में लॉकडाउन किया गया है, उस क्षेत्र के लोगों को घरों से बाहर निकलने की अनुमति नहीं होती है। उन्हें सिर्फ दवा और खाने–पीने जैसी जरूरी चीजों की खरीदारी के लिए ही बाहर आने की इजाजत मिलती है। लॉकडाउन के वक्त कोई भी व्यक्ति अनावश्यक कार्य के लिए सड़कों पर नहीं निकल सकता।

2. लॉकडाउन के फायदे

लॉकडाउन से पहले के समय की बात करें तो उस वक्त हम सभी अपने रोजमर्रा के कामों में इतना व्यस्त रहते थे कि अपनो के लिए, अपने परिवार के लिए व बच्चों के लिए कभी समय ही नहीं निकाल पाते थे और सभी की सिर्फ यही शिकायत रहती थी कि आज की दिनचर्या को देखते हुए समय किसके पास है? लेकिन लॉकडाउन से ये सारी शिकायते खत्म हो गई है। इस दौरान अपने परिवारों के साथ बिताने के लिए लोगों को बेहतरीन पल मिलें हैं। कई प्यारी–प्यारी यादें इस दौरान लोग सहेज रहे हैं और रिश्तों में आई कड़वाहट को मिटा रहे हैं।

लॉकडाउन के दौरान बच्चों को अपने माता–पिता के साथ समय बिताने का मौका मिल रहा है, वहीं जो लोग खाना बनाने के शौकीन है वो यूटयूब के माध्यम से खाना बनाना भी सीख रहे। पुराने सीरियलों का दौर वापस आ गया है जिसका मजा लोग अपने पूरे परिवार के साथ बैठकर ले रहे हैं। बच्चों के साथ वीडियो गेम्स, कैरम जैसे गृह खेल का बड़ों ने आनंद लिया। विद्यालयों में छुट्टी होने के कारण घर बैठकर शिक्षकों ने ऑनलाइन क्लासेज का सहारा लिया ताकि विद्यार्थियों की शिक्षा में कोई रूकावट न आए।

लॉकडान के समय लोग अपने शौक को भी पूरा कर रहे हैं क्योंकि उनको इसके लिए अपनी खुद की दबी इच्छाओं को पूरा करने का समय मिला है लोग डांस सीखने के शौकीन थे और समय की कमी के कारण नृत्य कला को कहीं–न–कहीं खुद से दूर कर रहे थे, आज वे अपने इस हुनर को निखार रहे हैं। जिन्हें म्यूजिक का शौक है, वो म्यूजिक सीख रहे हैं, पेंटिंग सीख रहे हैं ऐसे कई शौक लॉकडाउन के दौरान वापस से जी रहे हैं।

लॉकडाउन के रहने से कोरोना वायरस, जिससे पूरा विश्व परेशान है से छुटकारा पाया जा सकता है इसलिए यह हम सभी के लिए बहुत जरूरी है। हमारा काम सिर्फ इतना है कि हमें इसका पालन पूरी ईमानदारी के साथ करना है, साथ ही लॉकडाउन से कोरोना वायरस के मरीजों में गिरावट आएगी और संक्रमण फैलने का खतरा कम होगा। हमारे रोजमर्रा की जिंदगी की चीजों में कमी न हो इसलिए किराने की चीजें, फल, सब्जी, दवाईयां बाजार में उपलब्ध हैं ।

लॉकडाउन के दौरान प्रदूषण में कमी हुई है। अगर लॉकडाउन से पहले की बात करें तो उस समय कारखानों से निकाल वाला कचरा जल में प्रवाहित कर दिया जाता था, गाड़ियों को रास्ते पर दौड़ने से ध्वनि और वायु प्रदूषण हो रहे थे लेकिन लॉकडाउन की वजह से इन सभी चीजों में कमी आई है और आज चिड़िया की चहचहाहट हमारे आंगन में वापस से सुनाई दे रही है, जो कहीं खो सी गई थी। नदियों का जल स्वच्छता की ओर अग्रसर हो रहा है।

लॉकडाउन से बड़े–बड़े कारखानों और वाहनों का चलना निषेध हो गया है। इससे एक अच्छी चीज हुई है, जो है प्रदूषण व कमी । कल–कारखाने का कचरा बाहर जल में प्रवाहित कर दिया जाता था। वायु, ध्वनि और जल प्रदूषण में गिरावट आई है जो प्रकृति की दृष्टि से लाभदायक है ।

3. लॉकडाउन के नुकसान

लॉकडाउन की वजह से मजदूरों को बहुत नुकसान हुआ है। जो रोजमर्रा के काम से अपने घर का पेट पालते थे । आज उनके लिए एक वक्त की रोटी भी बहुत मुश्किल हो गई। कई मजदूर ऐसे हैं जो भूखे पेट ही सो रहे हैं। अगर लॉकडाउन का सबसे ज्यादा नुकसान किसी को हुआ है तो वह है मजदूर जो अपने परिवार का पेट पालने के लिए दिन–रात मेहनत करते हैं।

लॉकडाउन की वजह से देश की अर्थव्यवस्था को गंभीर नुकसान हुआ है। कारखानों को बंद रखने के कारण भारी नुकसान वहन करना पड़ रहा है, वहीं व्यापार भी पूरी तरह से ठप्प पड़ा हुआ है। लोगों की नौकरियां चली गई हैं जिसकी वजह से बेरोजगारी की समस्या भी उत्पन्न हो गई है। लॉकडाउन की वजह से देश आर्थिक रूप से कमजोर पड़ रहा है।

दिन–रात सिर्फ कोरोना से संबंधित खबरें लोगों को मानसिक रूप से परेशान कर रही हैं जो उन्हें नकारात्मक कर रही है दिन घर पर रहने और शारीरिक व्यायाम न होने से लोग खुद को स्वस्थ भी महसूस नहीं कर पा रहे हैं। बच्चे भी पूरे दिन घर पर चिड़चिड़ापन महसूस करने लगे हैं। क्योंकि वे बाहर खेलने हेतु अपने दोस्तों के साथ मिलने में असमर्थ हैं। कोरोना वायरस की लोगों को परेशान कर रही है जिससे कई लोग डिप्रेशन जैसी समस्या से जूझ रहे हैं।

4. उपसंहार

कोरोना वायरस के प्रकोप को रोकने के लिए इस संक्रमण से मुक्ति के लिए भारत के प्रधानमंत्री ने लॉकडाउन की घोषणा क्योंकि सामाजिक दूरी ही कोरोना को रोकने के लिए कारगर उपाय है। यही काण है कि लॉकडाउन को बढ़ाया जा रहा है । इसलिए हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम इस निर्णय का पूर्ण समर्थन करते हुए हम लॉकडाउन का पूरा पालन करें और इस वायरस को जड़ से मिटा दें। सरकार द्वारा दिए गए निर्देशों का पूरी ईमानदारी के साथ पालन करना ही हमारा कर्तव्य है, तभी इस महामारी को खत्म किया जा सकता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना
National Service Scheme

कोविड 19 का शिक्षा पर प्रभाव

कोरोना महामारी में ऑनलाइन शिक्षा की सफलता एवं असफलता

प्राप्ति कुर्मी बी.एस.सी.

शिक्षा का वास्तविक अर्थ है - सीख। जिससे मनुष्य का विवेक जाग्रत होता है यह शिक्षा न जाने कैसे परिवर्तित होती चली गई और अपने मूलरूप से पूरी तरह बदल गई। ये जीवन की भाग–दौड़ चल रही थी कि कोरोना महामारी से अचानक सब रूक गया बस, रेल, हवाई जहाज, टैक्सी सब बंद हो गया। हम सब जानते है, कोरोना वायरस एक वैश्विक महामारी के रूप में पूरे विश्व में फैली हुई है इसने पूरे विश्व को अपने पंजों में जकड़ लिया है इस समय सभी कोरोना की दूसरी लहर का सामना कर रहे है और कोरोना नामक राक्षस यह रूप पहले से भयानक है। इसके चलते फिर से दुकान, दफ्तर, विद्यालय, सार्वजनिक स्थल सभी पर ताले लगाये गए। सभी क्षेत्रों पर इसका बुरा प्रभाव पड़ा। दुनियाभर में 1.6 अरब बच्चे स्कूल और यूनिवर्सिटी नहीं जा सके यह दुनिया के कुल छात्रों का 90 फीसदी हिस्सा है। मानव इतिहास में पहली बार वैश्विक स्तर पर बच्चों की एक पूरी पीढ़ी की शिक्षा बाधित हुई है। जिसका असर हमारे वाली पीढ़ी पर भी लम्बे समय तक रहने की संभावना है।

सारे मुल्कों को नाज था, अपने–अपने परमाणु पर
भयनात बेबस हो गई, एक छोटे से कीटाणु पर!

कोरोना महामारी के दौरान बच्चे घर पर ही पढ़ाई कर रहे है ऐसे में उनके स्वभाव में भी परिवर्तन आ गया है। स्कूल में बच्चे शिक्षक स्टडी मैटेरियल और सहपाठियों से सीखते थे किन्तु अब यहां सीखने की स्थिति अवरोध हो गई है। अब केवल ऑनलाइन शिक्षा के आधार पर ही बच्चों को महज शिक्षा से जुड़े रखने का प्रयास हो रहा है। लेकिन स्कूलों में गरीब तबके के विद्यार्थी भी पढ़ते हैं तथा अधिकांश अभिभावकों के पास एड्राइड मोबाइल तो दूर की बात घर में टी. व्ही. तक नहीं है अतः राज्य सरकार दुबारा दूरदर्शन पर शिक्षा दर्शन, रेडियो पर शिक्षा वाणी और एड्राइड स्मार्ट फोन पर स्माइल कार्यक्रम के तहत भी कुछ बच्चे शिक्षा से नहीं जुड़ पा रहे हैं वचुअल पढ़ाई के कारण लड़के और लड़कियों के बीच का फर्क और गहरा हो गया है इस फर्क को डिजिटल डिवाइस कहा जा रहा है। यह लोगों के बीच का वह फासला है जो इंटरनेट की उपलब्धता से जुड़ा है।

खासकर 10 वीं और 12 वीं के विद्यार्थियों पर इसका बुरा प्रभाव पड़ा है। क्योंकि उनके कुछ विषयों के पेपर स्थगित कर दिए गए थे और अब तो दोनों परीक्षाएँ रद्द कर दी गई जबकि यह दोनों कक्षाएं विद्यार्थी जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण काल है इस पर भविष्य और उनके जीवन में आने वाला करियर पूर्ण रूप से निर्भर करता है। अभिभावक अपने बच्चों के आने वाले भविष्य के लिए बेहद चिंतित हैं।

जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार कोरोना का सकारात्मक प्रभाव भी पड़ा है 'ऑनलाइन क्लासेस के जरिये विद्यार्थी इस प्रकार के अनोखे शिक्षा प्रणाली को समझ पाए। लॉकडाउन के दुष्प्रभाव को ऑनलाइन शिक्षा पद्धति को समझ कम दिया गया है। केन्द्र सरकार ने शिक्षा प्रणाली को विकसित करने हेतु पहले साल की तुलना में इस साल व्यय अधिक किया है। ताकि कोरोना संकट काल के

नकारात्मक प्रभाव शिक्षा पर प्रभाव न पड़े। शैक्षणिक लक्ष्यों को हासिल करने के लिए वाट्सएप, जूम, जैसे एप और ई–मेल का प्रयोग बढ़ गया है और कोविड–19 महामारी के कारण डिजिटल माध्यम से अधिक मात्रा में लोग पढ़ाई कर रहे हैं और कम अवधि वाले पाठ्यक्रम भी लोकप्रिय हो रहे हैं।

अतः कोरोना वायरस के संकट में शिक्षा को जो नुकसान हुआ उसके सामने ये चीजें इतनी मायने तो नहीं है। लेकिन यह कोरोना संकट के भ्रस के फायदे की एक छोटी सुई तो है ही, सबसे अच्छी बात यह है कि इतने सालों में पहली बार इतने समय सब घर पर साथ रहे। परीक्षा से ज्यादा शिक्षा महत्वपूर्ण है। शिक्षा वह भी नैतिकता की जो किसी वास्तविक या वर्चुअल क्लासरूप से नहीं दी जा सकती है।

पिछले दिनों आए सर्वे के मुताबिक छात्रों की शिक्षा में इस महामारी की वजह से जो कभी आई है उसे दूर करने में कम से कम 3 साल का समय लग सकता है। इस महामारी में शिक्षण संस्थान बंद होने के कारण छात्रों के सीखने की प्रक्रिया प्रभावित हुई है। स्कूल और शिक्षण संस्थानों के बंद होने से निम्न और माध्यम आय वाले देशों में 99 प्रतिशत छात्र आबादी प्रभावित हुई है। इन नतीजों के मुताबिक कॉलेज जाने वाले छात्रों को लगता है कि कोविड–19 के कारण उन्हें शिक्षा में 40–60 फीसदी का नुकसान हुआ है। सर्वे में कहा गया है कि शिक्षा में यह नुकसान जो 7 देशों से आकलित शिक्षा नुकसान का दोगुना है। ट्रीटमलेज एडिटेक ने देश में 700 विद्यार्थियों और 75 विश्वविद्यालयों में अग्रणी छात्रों के बीच सर्वेक्षण किया ताकि उन्हें शिक्षा में हुए नुकसान का पता चल सके। शिक्षा को बचाने की चुनौती समाज के सामने बहुत बड़ा संकट है। मार्च में लॉकडाउन के बाद कुछ महीनों में मंदिर, मस्जिद, गुरुदारे और गिरजाघर तो खुल गए मगर स्कूल कॉलेज विश्वविद्यालय आदि शिक्षा के ठिकाने बंद रहे है। ऑनलाइन शिक्षा जारी है मगर स्कूल कॉलेज टेक्निकल इंस्टीट्यूट जाए बगैर क्या बच्चों से असल पढ़ाई लिखाई करवाई जा सकती है।

ऑनलाइन कक्षाओं का विचार महामारी के मुश्किल समय में विद्यार्थियों की पढ़ाई को जारी रख पाया है। विद्यार्थी को डिजिटल दुनिया का अच्छे से ज्ञान प्राप्त हुआ है। कुछ बच्चे जो रोज कॉलेजों में जाकर नहीं पढ़ सकते हैं। कुछ बच्चे जो रोज कॉलेजों में जाकर नहीं पढ़ सकते हैं वह भी अब डिजिटल जैसे IIT, IIM, AMITY यूनिवर्सिटी एवं अन्य में ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली का प्रयोग कर अपने छात्रों को सहयोग करने की पूरी कोशिश की है।

शिक्षा युवा पीढ़ी के जीवन को कौशल प्रदान करती है। और उन्हें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है साथ ही सुशासन हेतु आम लोगों को उनके अधिकारों को प्रति जागरूकता करने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उत्तम शिक्षा व्यवस्था के लिए आवश्यक है कि देश के हर गाँव में हर शहर में इंटरनेट कनेक्शन, बिजली की आपूर्ति शिक्षकों और छात्रों के डिजिटल माध्यम से जुड़ने को बेहत बनाने का प्रयास किए जाने चाहिए।

राष्ट्रीय सेवा योजना
National Service Scheme

कोविड 19 का विद्यालयीन शिक्षण पण प्रभाव

सोनाली प्रजापति बी.कॉम., तृतीय वर्ष

कोविड के कारण स्कूलों के बंद होने से बच्चे असमान रूप से प्रभावित हुए क्योंकि महामारी के दौरान सभी बच्चों के पास सीखने के लिए जरूरी अवसर साधन या पहुंच नहीं थी। लाखों छात्रों के लिए स्कूलों का बंद होना उनकी शिक्षा में अस्थायी तौर पर व्यवधान भर नहीं बल्कि अचानक से इसका अंत होगा।

शिक्षा के तमाम सरकारों की पुनर्निमाण योजनाओं का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए, ताकि दुनिया भर में हर बच्चे को निःशुल्क सुलभ की जा सकें। सरकार को कोविड–19 महामारी से हुए अभूतपूर्व व्यवधान के कारण बच्चों की शिक्षा के नुकसान की भरपाई के लिए तुरन्त कदम उठाने चाहिए।

कोविड–19 महामारी के कारण बच्चों के शिक्षा के अधिकार में असमानता :–

कोविड के कारण स्कूलों के बंद होने से बच्चे असमान रूप से प्रभावित हुए, क्योंकि महामारी के दौरान तमाम बच्चों के पास सीखने के लिए जरूरी अवसर, साधन या पहुंच नहीं थी महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा पर अत्यधिक निर्भरता ने शिक्षा संबंधी सहायता के मौजूदा असमान वितरण को बढ़ावा दिया है अनेक सरकारों के पास ऑनलाइन शिक्षा शुरू करने के लिए ऐसी नीतियां संसाधन या बुनियादी ढांचा नहीं थे, जिससे कि सभी बच्चे समान रूप से शिक्षा हासिल नहीं कर सकें। मई 2021 तक 26 देशो में स्कूल पूरी तरह से बन्द थे और 55 देशों में स्कूल केवल आंशिक रूप से या तो कुछ स्थानों में या केवल कुछ कक्षाओं के लिए खुले थे दुनिया भर में स्कूल जाने वाले करीब 90 फीसदी बच्चों की शिक्षा महामारी से बाधित हुई है।

कोरोना वायरस से हरेक व्यक्ति के जीवन की सुरक्षा के प्रयास ने बच्चों की शिक्षा का हरण कर लिया गया, बच्चों के हितों के बलिदान की भरपाई के लिए सरकारों को अन्ततः इस चुनौती के लिए करना चाहिए। और दुनिया के सभी बच्चों के लिए तत्काल निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध करनी चाहिए।

कोविड–19 के प्रसार को रोकने के उद्देश्य से स्कूल बंद होने के कारण 1 विलियन से अधिक बच्चों के पिछड़ने का खतरा था। दुनिया के बच्चों को सीखने के लिए देश, दूरस्थ कार्यक्रम लागू कर रहे हैं फिर भी दुनिया के कई बच्चों विशेष रूप से गरीब घरों के पास घर पर इंटरनेट, पर्सनल कम्प्यूटर, टी.वी. या यहां तक कि रेडियो भी नहीं है, जो मौजूदा सीखने की असमानताओं के प्रभावों को बढ़ाता है। घर आधारित शिक्षा के लिए आवश्यक तकनीकों तक पहुंच की कमी वाले छात्रों के पास अपनी शिक्षा जारी रखने के सीमित साधन है। नतीजतन कई लोगों को कभी स्कूल नहीं लौटने का जोखिम है दुनिया भर में शिक्षा के क्षेत्र में की गई प्रगति को पूर्ववत करना। 188 देशों (अप्रैल 2020 तक) में स्कूल बन्द होने के साथ उसमें से कई इंटरनेट, टीवी और रेडयो जैसी तकनीकी का उपयोग करके निरन्तर शिक्षा प्रदान करने के वैकल्पिक तरीके तलाश रहे हैं हालांकि इन तकनीकों तक पहुंच कई निम्न और माध्यम आय वाले देशों में सीमित हैं, खासकर गरीब परिवारों के बीच।

जबकि 90 प्रशित से अधिक देशों ने डिजिटल और या प्रसारण दूरस्थ शिक्षा नीतियों को अपनाया, केवल 60 प्रतिशत ने पूर्ण– प्राथमिक शिक्षा के लिए ऐसा किया।

प्रसारण या डिजिटल मीडिया के माध्यम से सीखने की निरन्तरता सुनिश्चित करने के लिए सरकारों द्वारा उठाए गए नीतिगत उपायों को वैश्विक स्तर पर पूर्व–प्राथमिक से माध्यमिक शिक्षा ने 69 प्रतिशत स्कूली बच्चों (अधिकतम) तक पहुंचने की अनुमति दी गई ।

दुनिया भर में 31 प्रतिशत स्कूली बच्चों (463 मिलियन) तक प्रसारण और इंटरनेट आधारित दूरस्थ शिक्षा नीतियों तक नहीं पहुंचा जा सकता है या तो घर पर आवश्यक तकनीकी सम्पत्तियों ही उसी के कारण या क्योंकि उन्हें अपनाई गई नीतियों द्वारा लक्षित नहीं किया गया था।

ऑनलाइन प्लेटफार्म शिक्षा देने के लिए सरकारों द्वारा सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले साधन थे जबकि 83 प्रतिशत देश इस पद्धति का उपयोग करते हुए बन्द रहते थे।

कोविड-19 का देश पर प्रभाव

नेहा यादव बी.एस.सी., द्वितीय वर्ष

कोविड–19 एक ऐसी महामारी है जिसका पूरे देश पर मानसिक तथा आर्थिक प्रभाव पड़ा, इसने न केवल रोजगार को प्रभावित किय अपितु शिक्षा को प्रभावित किया है। इसका असर हर उम्र के व्यक्तियों पर हुआ है चाहे वो बच्चे हो, युवा हों या फिर बुजुर्ग। कोविड–19 की वजह से हमारे देश की अर्थव्यवस्था भी प्रभावित हुई। सरकार ने इस महामारी को रोकने के लिए बहुत प्रयास भी किए। भारतीय समाज, जाति तथा धर्म के आधार पर कई भागों में वहां हुआ है एवं यहां आर्थिक असमानताएं भी बहुत है। जिसकी वजह से भी बहुत समस्याएं उत्पन्न हुई है।

भारत में 2020 कोरोना वायरस महामारी का आर्थिक प्रभाव काफी हद तक विघटनकारी रहा है। सांख्यिकी मंत्रालय के अनुसार वित्त वर्ष 2020 की चौथी तिमाही में भारत की वृद्धि दर घटकर 3.1 प्रतिशत रह गई। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का अनुमान है कि भारतीय अर्थव्यवस्था 4.5 की दर से सुकड़ जाएगी।

कोविड–19 का देश की शिक्षा पर भी बहुत प्रभाव पड़ा है। प्राथमिक हो या उच्च शिक्षा, छात्रों का पठन–पाठन बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। कुछ बड़े संस्थान आईआईटी, आई.आई.एम, एमिटी यूनिवर्सिटी एवं अन्य ने ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली का इस्तेमाल कर अपने छात्रों को सहयोग करने की पूरी कोशिश की है परन्तु ऐसे संस्थान गिनती भर के हैं।

एक ओर महत्वपूर्ण विषय है कि जो छात्र पहले खुल कर रहते थे विभिन्न गतिविधियों जैसे खेल आदि मनोरंजन में अपने सहपाठियों के साथ खुलकर भाग लेते थे आज वो छात्र अपने घरों में कैद है। सामाजिक दूरी बना रहे है। ऐसे में अगर ये लॉकडाउन और बड़ातो छात्र तनाव में आ सकते हैं। वही टी.व्ही., लेपटॉप, मोबाइल का अधिक उपयोग भी उनकी मानसिक स्थिति पर बुरा प्रभाव डाल रहा है । परन्तु कोविड–19 की वजह से सिर्फ नकारात्मक ही प्रभाव नहीं पड़े हैं। अपितु कुछ सकारात्मक प्रभाव भी बड़ा है। जैसे पहले लोग मोबाइल या कम्प्यूटर का उपयोग सिर्फ मनोरंजन के लिए करते थे। परन्तु महामारी के बाद हर कोई मोबाइल का उपयोग हर जरूरत के लिए करने लगे हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना
डॉ. सरिता जैन
कार्यक्रम अधिकारी
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता
महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

"युवा शक्ति - कोरोना मुक्ति"

"युवा शक्ति - कोरोना मुक्ति"

राष्ट्रीय सेवा योजना
डॉ. सरिता जैन
कार्यक्रम अधिकारी

राष्ट्रीय सेवा योजना
डॉ. सरिता जैन
कार्यक्रम अधिकारी
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता

राष्ट्रीय सेवा योजना
डॉ. सरिता जैन
कार्यक्रम अधिकारी

राष्ट्रीय सेवा योजना
डॉ. सरिता जैन
कार्यक्रम अधिकारी
डॉ. सरिता जैन
कार्यक्रम अधिकारी

राष्ट्रीय सेवा योजना
National Service Scheme

कोविड-19 का सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

कविता अहिरवार बी.एच.एस.सी., द्वितीय वर्ष

कोरोना संकटकाल पिछले साल से अब तक बनी हुयी है। कोरोना की वजह से दुनिया भर में कई परिवारों ने अपनों को खो दिया है। रोज हर जगह कोरोनो की वजह से लोगों की मौत हो रही है। हालांकि अभी इस परिस्थिति को काबू पाने के लिए मेडिकल और स्वास्थ्य विभाग पूरे लगन के साथ मरीजों को बचा रही है। डॉक्टर और नर्से दिन भर मरीजों की सेवा कर रहे हैं ताकि वह स्वस्थ हो जाए। कोरोनो से राहत दिलाने के लिए लोगों को वैक्सीन दिए जा रहे हैं। कोरोना ने जैसे सामाजिकता ही छीन ली है। कई रिश्तेदार अपनों की मृत्यु के बावजूद उनसे मिलने नहीं जा पा रहे हैं। कोरोना से निपटने के लिए सामाजिक दूरी को बरकरार रखना जरूरी है। कोरोना जैसी महामारी से निपटने के लिए हम सारे नियमों का पालन कर रहे हैं। ज्यादा जरूरत होने पर ही लोग बाहर जा रहे हैं। अन्यथा वह घरों से दफ्तर और बच्चे ऑनलाइन क्लासेज के जरिये पढ़ाई कर रहे हैं। एक हिस्सा ऐसा भी है जिन्हें अस्पताल, बैंक और व्यापार की वजह से बाहर जाना पड़ रहा है। हम त्यौहार जैसे समय में अपने दोस्तों से नहीं मिल सकते हैं। उन्हें फोन द्वारा ही संपर्क किया जा सकता है । यह सभी परिवर्तन कोरोना महामारी के कारण हुआ है।

सामाजिक दूरी की वजह से लोगों के रिश्तों में दूरियां आ रही है। वह अपने रिश्तेदारों की मृत्यु पर सांत्वना देने या उन्हें अंतिम विदाई देने के लिए भी नहीं जा पा रहे हैं। लोगों से मेल–मिलाप न के बराबर हो गया है। बाहर किसी काम से लोग जब रहे हैं तो एक– दूसरे से दूरी रख रहे हैं। महामारी की वजह से सामाजिक रिश्तों को चोट पहुंच रही है ।

कोरोना वायरस ने इंसान की सामाजिक प्रवृत्ति को खत्म कर दिया है। वह लोगों के खुशी और दुःख में शामिल नहीं हो पा रहे हैं। पहले लोग एक दूसरे से खुशी और दुःख में शामिल होते थे जो अभी न के बराबर हो गया है। इसका कारण है कोरोना महामारी का मानव जाति पर आक्रमण ।

कोरोना महामारी की वजह से देश की अर्थव्यस्था पर बहुत असर पड़ा है। व्यापार इत्यादि कई महीनों तक बंद रहा क्योंकि लॉकडाउन का समय चल रहा था । व्यापारियों को बहुत नुकसान झेलना पड़ा है। पिछले साल लॉकडाउन के वजह से मजदूरों को पैदल अपने गांव वापस जाना पड़ा है। गरीब मजदूरों को काफी तकलीफों का सामना करना पड़ा है। लॉकडाउन की वजह से बहुत से लोगों के लोगों को रोजगार के अवसर नहीं मिल पा रहे हैं।

कोरोना महामारी की वजह से विद्यार्थी विद्यालय और कॉलेज नहीं जा पा रहे हैं। विद्यार्थी ऑनलाइन क्लासेज करके शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। वैज्ञानिकों ने काफी कोशिशें की ताकि वह इस बार कापू पा सके लेकिन फिलहाल सामाजिक दूरी और मास्क, वैक्सीनेशन के अलावा कोई उपाय नहीं है। वैज्ञानिको ने भी इसे रोकने के लिए ठोस कदम उठा नहीं पा रहे हैं। लेकिन वह हर दिन रिसर्च कर रहे हैं। पूरी दुनिया एक भयानक संकट से जूझ रही है। जिसके कारण समाज में नकारात्मक प्रभाव पड़े हैं। लोग उत्सवों में अपनों को गले लगाना भूल गए हैं। अपने घरों तक सीमित हैं। लोग पहले से अधिक जागरूक हो गए हैं इसलिए कोरानों संकटकाल से मुक्ति पाने के लिए जरूरी ऐहतियात बरत रहे हैं हमारे देश ने ही नहीं बल्कि पूरी

दुनियां ने कोरोना संकटकाल के कारण अनगिनत समस्याओं का सामना किया है। कई लोगों की इस संकटकाल में नौकरी चली गयी और आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। सभी परेशानियों से उभरकर सभी लोग सुरक्षित तरीकों से जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं। कोरोना की वजह से त्योहारों के रंग फीके पड़ जाते हैं। ईद, होली, दिवाली की शुभकामनाएं लोग एक–दूसरे को देने में असमर्थ हैं। आजकल तो यह आलम है लोग एक दूसरे को गले मिलना तो कोसों दूर एक दूसरे के पास जाने से भी घबराते हैं।

कोरोना काल के दौरान लॉकडाउन जैसी स्थिति कई बार उत्पन्न हुयी। ऐसे में घरों के सारे सदस्य एक साथ घर में बंद रहे और उन्हें एक समय बिताने का मौका मिला। सभी सदस्यों के घरों में रहने के कारण महिलाओं के काम करने की अविध बढ़ गयी है । उन्हें घर से दफ्तर और घर के सारे काम संभालने पड़ रहे हैं। अभी सभी लोग इस संकटकाल की परिस्थिति में रहना सीख गए हैं। कोरोना संकटकाल के दौरान लोग साफ सफाई रख रहे हैं और अपने स्वास्थ्य का बेहतर ध्यान दे रहे हैं।

समाज की कल्पना मनुष्य के बगैर नहीं की जा सकती है। कोरोना महामारी ने मनुष्य को अकेला कर दिया है। जैसे ही मनुष्य कोरोना संकटकाल पर काबू पा लेगा हम सबको उम्मीद है सब कुछ पहले जैसा हो जाएगा। जब सब कुछ ठीक हो जायेगा तो लोग सामान्य जीवन व्यतीत करने लगेंगे।

राष्ट्रीय सेवा योजना
National Service Scheme

देश की अर्थव्यवस्था पर लॉकडाउन का प्रभाव

पूजा यादव बी.एस.सी., तृतीय वर्ष

लॉकडाउन के समय देश पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। रोजगार से लॉकडाउन से बहुत दिक्कते आई है। बहुत कुछ उथल– पुथल मच गई है। लॉकडाउन से बहुत कुछ बदल गया है देश में तरक्की की जगह गिरावटे आई हैं। जिससे तरक्की नहीं हो पा रही है। आज के समय लॉकडाउन से बहुत सारी दिक्कत हुई देश तरक्की करने के बजाय गिरावट पर पहुंच गया। देश की आर्थिक स्थिति पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है । स्थिति ठीक होने के कारण देश आज विकसित हो ही रहा था लेकिन लॉकडाउन ने सब कुछ तबह कर दिया फिर हर व्यक्ति को दिक्कत उठानी पड़ रही है लॉकडान की वजह से हर एक व्यक्ति को हर प्रकार की दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।इसे ही हम इस तरह के मामले सामने आ रहे हैं कहीं–कहीं देश में तो व्यक्ति भूखे ही अपना जीवन–यापन कर रहे हैं लॉकडाउन लगने पर बहुत सारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा है। लेकिन फिर भी बहुत कुछ बदला है लॉकडाउन लगने पर कम्पनियां बंद हो गई हर व्यक्ति की नौकरी कार्य बंद किये गये फिर भी देश विकसित है और फिर भी तरक्की कर ही रहा है। आज देश के युवा से सीखना चाहिए कुछ आज का युग में अनेक प्रकार की बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है ।

राष्ट्रीय सेवा योजना
National Service Scheme

कोविड-19 एक महामारी

भावना गुप्ता बी.एस.सी., तृतीय वर्ष

पूरे विश्वभर में फैला हुआ कोरोना वायरस (कोविड– 19) एक संक्रमित बीमारी है। कोरोना वायरस का संक्रमण सबसे पहले दिसम्बर 2019 में चीन के बुहान शहर में हुआ था। यह संक्रमण एक संक्रमित व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में जल्द फैल जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) ने कोरोना वायरस को महमारी नाम से घोषित कर दिया है। इस वायरस का संक्रमण होने के बाद व्यक्ति को जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, गले में खराशी जैसी समस्याएं उत्पन्न होती है।

यह वायरस अलग–अलग लोगों पर उनकी रोगप्रतिरोधक क्षमता से अलग–अलग तरीके से प्रभाव डालता है। इसके गंभीर मामले में ज्यादा परेशानी, किडनी फेल होना और उससे मौत भी हो सकती है।

कोरोना वायरस से बचने के लिए हमें मुंह पर मास्क लगाना, सामाजिक दूरी बनाकर रखना, हाथों को बार–बार अच्छी तरह से धोना, सेनेटाइजर करना बीमार व्यक्ति से दूर रहना, अपनी तबीयत पर ध्यान देना, कोरोना का टीका उपल्ध होने पर जरूर लेना आदि।

उपायों का सख्ती से पालन करना चाहिए। कोरोना संक्रमण के कारण पूरा देश (विश्व) मानों थम सा गया है। इस समय हर देश के नागरिकों को अपना आत्मविश्वास बढ़ाना चाहिए क्योंकि जिंदगी में मुसीबतों से न घबराकर उनका सामना करने वालों को बाजीगर कहते हैं। कोरोना के खिलाफ देश के स्वास्थकर्मी, पुलिस, कोरोना योद्धा, हमारी सरकार आदि स्वयं को जोखि में डालकर दिन–रात मानवता की सेवा कर रही है। हमें उनका सम्मान करना चाहिए।

यह हमारे इम्तिहान की घड़ी है। इसमें हमें जीत हासिल करनी है। इस समय हम सभी हरिवंश राय जी की कविता की कुछ पक्तियां सदैव ध्यान में रखें

असफलता एक चुनौती है,

स्वीकार कर लो ।

क्या कमी रह गयी,

देखों और सुधार करो।

हम सब को उम्मीद है, इस महामारी के युद्ध में हम जरूर जीतेंगे।

राष्ट्रीय सेवा योजना
National Service Scheme

कोविड -19 करोना और ऑनलाइन शिक्षा

गीता सौर बी.कॉम., तृतीय वर्ष

प्रस्तावना

कोविड–19 के नाम से पुकारे जाने वाले इस वायरस का पूरा नाम कोरोना वायरस है। यह वायरस आज संपूर्ण विश्व में ज्वालामुखी की भाँति फैलता जा रहा है। चीन से शुरू होने वाला यह वायरस भारत समेत अनेक देशों के करोड़ों निवासियों की जान ले चुका है। अभी भी इसका खतरा प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर मंडरा रहा है।

कोविड- 19 क्या है ?

कोविड– 19 एक भयंकर संक्रमण है, जो कि एक दूसरे के संपर्क में आने वाले से फैलता है। यह वायरस साल 2019 में चीन से शुरू हुआ था चीन में इस संक्रमण से संक्रमित पहला केस 8 नवंबर को सामने आया। इसके बाद इस संक्रमण ने चीन समेत पूरे विश्व को अपने चपेट में ले लिया।

कोविड– 19 कोरोना वायरस से संबंधित कई प्रकार के वायरसों में से एक है। कोविड डिसेस अथवा कोरोना वायरस से संबंधित होने के कारण तथा वर्ष 2019 ने इसकी उत्पत्ति होने के कारण इस वायरस का संक्षिप्त नाम कोविड–19 रखा गया। पहले इसे चीनी वायरस का नाम भी दिया जा रहा था लेकिन डब्ल्यू.एच.ओ. के अनुसार इसका नाम कोविड–19 रखा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वायरस का नाम किसी भीदेश के नाम से या अनुचितरूप से प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। खांसना, छींकना, तेज ज्वर आना तथा गंध व स्वाद का आभास न होना कोविड–19 लक्षणों से है। इन लक्षणों के साथ व्यक्ति को सांस लेने में भी बेहद परेशानी का सामना करना पड़ता है। ऐसे लक्षणों वाले व्यक्तियों को कोरोना कि जांच करवाना आवश्यक हो जाता है। यदि वह कोविड–19 की जांच में पॉजिटिव निकलता है तो उसे तुरंत कोरोन्टाईन करने की हिदायत दी जाती है। ताकि उसके माध्यम से यह संक्रमण अन्य लोगों तक न पहुंचे।

कोविड - 19 का शिक्षा पर असर

कोविड–19 की महामारी ने आज समूचे विश्व की अर्थव्यवस्था, शैक्षणिक व्यवस्था सामाजिक स्तर को अत्यंत प्रभावित किया है। कोविड–19 के प्रभाव के कारण सरकार द्वारा लॉकडाउन किया गया। निर्देश समय समय पर दिये गए इस निर्देश के चलते स्कूल कॉलेज को पूर्णतः बंद कर दिया गया है। इस स्थिति में ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली की शुरुआत की गई, परन्तु ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले छात्र – छात्राओं के लिए यह व्यवस्था ज्यादा कारगर साबित नहीं हो सकेगी क्योंकि वहां अधिकतर लोगों के पास ऑनलाईन पढ़ाई करने के लिए ना तो एंडराइड फोन है और न ही नेट की उचित व्यवस्था है। ऐसे में आर्थिक तौर पर कमजोर परिवा के छात्रों के लिए पढ़ाई करना बेहद मुश्किल है।

कोविड–19 के प्रभाव के कारण विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं को भी निरस्त कर दिया गया। जिनसे विद्यार्थियों के आतविश्वास पर ही असर पड़ा है । नए सत्र में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को भी आगे मुश्किल का सामना करना पड़ेगा।

भविष्य में शिक्षा प्रणाली को पुनः उचित स्तर पर लाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए जाने पड़ेंगे कोविड–19 के कारण उत्पन्न यह स्थितियां विद्यार्थियों के मनोबल को तथा पढ़ाई हेतु उनके लगन को ठेस पहुंचा रही है। इस समय यह आवश्यकता है कि अभिभावक अपने बच्चों को घर पढ़ाई करने के लिए उत्साहित करें ताकि शिक्षा के प्रति उनकी रूचि में कमी ना आए। साथ ही विद्यार्थी अपने साथियों के साथ आपस में पढ़ाई से संबंधित चर्चा करें। इससे उनके ज्ञान में संभावित रूप से वृद्धि होगी।

राष्ट्रीय सेवा योजना
National Service Scheme

कोविड-19 करोना महामारी का शैक्षणिक गतिविधियों पर प्रभाव

सरस्वती बंसल बी.कॉम., तृतीय वर्ष

अपनों को अपनों से ही दूर कराया, स्कूल कॉलेज
पर ताला है डलवाया, ऐ कोरोना तूने तो देश
का भविष्य है मिटाया।

शिक्षा का वास्तविक अर्थ है सीख। इससे मनुष्य का विवेक जाग्रत होता है। कहते हैं कि शिक्षित मनुष्य ही एक अच्छी समाज का निर्माण कर सकता है। हम सभी शिक्षा के महत्व को भली–भांति समझते हैं। शिक्षा ही देश व लोकतंत्र की नींव को मजबूत व आधारभूत बनाती है।

पर हम सभी यह देश रहे है कि हमारे देश में कोरोना नामक महामारी ऐसी आयी कि इसने सभी को हिला कर रख दिया। इस कोरोना नामक राक्षस ने सभी की जिंदगी में तबाही मचा दी। इसके चलते दुकान, दफ्तर, विद्यालय आदि बंद करने पड़े, कई परिवार बेगारहो गए. अपने अपनों से दूर हो गए। इसका सभी क्षेत्रों पर बहुत बुरा असर पड़ा।

इसके कारण शिक्षा प्रणाली ने भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ा, परीक्षाओं को स्थगित करान पड़ा, बच्चे स्कूल नहीं जा पाए जिसके कारण उनमें अनुशासनहीनता व पढ़ना–लिखना कैसे है व मोबाइल की दुनिया में ज्यादा व्यस्तता देखने को मिली है। 10 वीं 12 वीं की परीक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण होती है पर स्कूल बंद होने के कारण वह नहीं हो पाई, जिसके कारण बच्चों की नींव भी कमजोर रही। इस कोरोना के कारण लगभग 1.6 अरब बच्चे स्कूल व कॉलेज नहीं जा सके, दुनिया के कुल 90 फीसदी बच्चे कोरोना के कारण बहुत पिछड़ गए। मानव इतिहास में पहली बार एक पूरी पीढ़ी शिक्षा से वंचित रही, जिसका असर आने वाली पीढ़ी पर भी लंबे समय तक रहने की संभावना है।

‘अशिक्षित को शिक्षा दो, अज्ञानी को ज्ञान
शिक्षा से ही बन सकता है, भारत देश महान।’

राष्ट्रीय सेवा योजना
National Service Scheme

कोविड-19 आर्थिक प्रभाव

कारोना का वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

वैशाली प्रजापति बी.ए., तृतीय वर्ष

'कोरोना का इस कदर वर्षा कहर,
अर्थव्यवस्था देश की गई ठहर,
हॉटस्पॉट बन गए व्यापारी शहर।'

इस समय संपूर्ण भारत में लॉकडाउन है सभी लोग अपने घरों में कैद है। कोरोना वायर ने एक वैश्विक महामारी का रूप ले लिया है। कोरोना वायरस कैसे आया,कहां से आया हमें नहीं पता। लेकिन समाचार की दृष्टि से यह वायरस चीन के राज्य से फैला है। प्रभावी एवं जानलेवा वायरस है। यह वायरस मानव के बाल की तुलना में 900 गुना छोटा है, फिर भी इसने पूरे विश्व में हाहाकार मचकमी रखा है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था पर कारोना वायर का प्रभाव

विश्वभर में तेजी के साथ फैल रहे घातक कोरोना वायरस ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को बुरी तरह से प्रभावित किया है। इसके चलते मांग एवं आपूर्ति दोनों पर असर पड़ रहा है। कोरोना के बढ़ते मामलों के बीच दो महीने पहले उच्चतम सतर पर रहने वाल स्टॉक मार्केट में 20 फीसदी से ज्यादा की गिरावट आ चुकी है। तेल की बड़ी आपूर्ति और मांग में कमी के बीच विश्व स्वास्थ्य संगठन की तरह से कोरोना पर 24 जनवरी को हुई पहली बैठक के बाद से अंतर्राष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों में 50 फीसदी की गिरावट आ चुकी है। कोरोना का विकासशील एशियाई अर्थव्यवस्था पर व्यापक असर होगा। इसके अनुसार कोरोना से दुनिया की अर्थव्यवस्था को 77 बिलयन डॉलर से 347 बिलयन तक यानि वैश्विक जीडीपी का 0.1 प्रतिशत से 0.4 प्रतिशत तक का नुकसान हो सकता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना
National Service Scheme

भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोविड- 19 का असर

लीना जाटव, बी.एच.एस.सी., प्रथम वर्ष

संयुक्त राष्ट्र की कॉन्फ्रेंस ऑन ट्रेड एंड डेवलमेंट के अनुसार कोविड–19 से प्रभावित दुनिया की 15 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में से एक भारत भी है यूरोप के आर्थिक सहयोग और विकास संगठन ने भी 2020–2021 में भारत की अर्थव्यवस्था के विकास की गति का पूर्वानुमान 1.1 प्रतिशत घटा दिया है। ओईसीडी ने पहले अनुमान लगाया था कि भारत की अर्थव्यवस्था की विकास दर 6.2 प्रतिशत रहेगी लेकिन अब इसे कम करके 5.1 प्रतिशत कर दिया है।

'अर्थव्यवस्था ने ओढ़ ली मंदी की चादर

धीमी पढ़ने लगी देशों की विकास दर ।'

षि क्षेत्र पर कोरोना का प्रभाव

आयात–निर्यात और विनिर्माण के साथ–साथ कोरोना वायरस का प्रभाव भारतीय कृषि व कृषकों पर धीरे–धीरे पड़ रहा है। इस महामारी से भारत में आयात होने वाले कृषि उत्पादों पर भारी नकारात्मक असर हुआहै। कोरोना वायरस भारत द्वारा निर्यात में भी कमी आने की आशंका है। लेकिन कितनी होगी यह कहना अभी मुश्किल है लेकिन कच्चे माल के निर्यात में 1.6 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी है। कोरोना वायरस का संकट उस समय आया है जब खेतों में रबी की फसल खड़ी है। पहले तो किसानों को फसलों की कटाई की चिंता थी और अब फसल के दाम आधे मिलने को लेकर भी उम्मीदें डूबती नजर आ रही हैं।

गांवों की ओर पलायन करने बदहवास लोगों का दृश्य तो वर्तमान युवा पीढ़ी ने पहले कभी नहीं देखा होगा। किसानों को कटाई के लिए मजदूर नहीं मिल रहे हैं बड़े किसान तो आधुनिक हारवेस्टर कम्बाइनों द्वारा कटाई कर लेंगे लेकिन फसल के लदान के लिए भी उन्हें मजदूरों की आवश्यकता पड़ेगी। अगर देश का कृषि क्षेत्र लड़खड़ाया तो समूची अर्थव्यवस्था ही प्रभावित होगी ।

कोरोना वायरस संक्रमण से बचाव हेतु जागरूकता अभियान चलाया

सागर, आचरण संवाददाता।

17 मार्च को शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर की एन.सी.सी. कैडेट्स एवं एन.एस.एस. की छात्राओं ने प्राचार्य के निर्देश पर लें. डॉ. अंशु सोनी के मार्गदर्शन में महाविद्यालय के मुख्य द्वार पर छात्राओं को केरोना वायरस संक्रमण से बचाव हेतु आवश्यक एहतियात के लिए जागरूक किया तथा वालेंनटियर बनकर महाविद्यालय में परीक्षा कार्य के अतिरिक्त न आने हेतु प्रेरित किया ताकि एक साथ परिसर में भीड़ जमा न हो जिससे छात्राओं का संक्रमण से बचाव हो तथा स्वास्थ्य लभ बना रहें। इस अवसर पर संस्था प्राचार्य डॉ. बी.डी. अहिरवार ने छात्राओं से इस वायरस से भयभीत होने की अपेक्षा उसकी सुरक्षा एवं रोकथाम के उपाय अपनाने हेतु कहा।

इस कार्य में डॉ. सरिता जैन, डॉ. संजय खरे, डॉ. शैलेन्द्र पटेल एवं डॉ. रोहित सैनी ने महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

एनएसएस-यूनिसेफ के साप्ताहिक ऑनलाइन प्रशिक्षण का समापन

उमरिया. (एक्सप्रेस)।

शा. आरव्हीपीएस अग्रणी महाविद्यालय एवं आदर्श महाविद्यालय उमरिया की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाईओं के कार्यक्रम अधिकारीद्वय डॉ. नियाज अहमद अन्सारी एवं डॉ. अरविंद शाह बरक? सहित 6 स्वयंसेवको द्वारा संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी यूनिसेफ (यूनाइटेड नेसंश इंटरनशनल चिल्ड्रन इमरजेंसी फंड) के सहयोग से बेंगलुरू की संस्था निम्हंस और एनएसएस आवाज द्वारा आयोजित सासाहिक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 21 से 29 मई 2020 तक सक्रिय सहभागिता की गई। जानकारी मिली है कि पाली महाविद्यालय में भी कार्यक्रम अधिकारी डॉ. साहिद सिद्दीकी के निर्देशन में दो स्वयंसेवकों ने यह ऑनलाइन प्रशिक्षण ऑनलाइन प्राप्त किया है। इस प्रशिक्षण द्वारा युवाओं को कोविड-19 संकट से उत्पन्न निराशा, परीक्षा के तनाव, बेरोजगारी एवं भटकाव को दूर करने के उद्देष्य से कार्यक्रम अधिकारी एवं स्वयंसेवको को मास्टर ट्रेनर के रूप तैयार किया गया है। अब ये मास्टर ट्रेनर्स कालश के युवाओं की मानसिक, शैक्षिक एवं सामाजिक समस्याओं के निदान में परामर्शदाता की भूमिका का निर्वहन करेगें। डॉ. अंसारी ने बताया कि प्राचार्यद्वय डॉ. सी. बी. सोंदिया एवं डॉ. अभय पाण्डेय के उत्साहवर्धन और मार्गदर्शन में ना केवल एनएसएस के स्वयंसेवको बल्कि अन्य समस्त छात्र-छात्राओं को अपने-अपने घर से ही कोरोना वाइरस के संक्रमण से बचते हुए ल?ने हेतु योद्धाओं के रूप में कार्य किया जाएगा। 200 से अधिक विद्यार्थियों,प्राध्यापकों एवं अतिथि विद्वानों ने आरोग्य सेतु एप्प डाउनलोड कर की मिसाल कायम उल्लेखनीय है कि अब तक तीनों महाविद्यालयों के 200 से अधिक विद्यार्थियों सहित सभी प्राध्यापकों एवं अतिथि विद्वानों ने आरोग्य सेतु एप्प डाउनलोड कर एक मिसाल स्थापित की हैं। इस कार्य में वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो. एम. एन. स्वामी, संजीव शर्मा, डॉ. गंगाधर ढोके, विमला मरावी सहित सभी नवनियुक्त सहा. प्राध्यापकों, अतिथि विद्वानों एवं कार्यालयीन स्टाफ द्वारा भी सक्रिय योगदान दिया है।

सक्रिय प्रतिभागियों को प्राप्त होगा ई-प्रमाणपत्र

अवधेश प्रताप सिंह वि. वि. के एनएसएस समन्वयक डॉ. सी. एम. तिवारी ने भी कार्यक्रम अधिकारियों को आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया। इस विशेष ऑनलाइन प्रशिक्षण के संचालन में प्रो. परमेष्वर सिंह मरावी, ऋषिराज पुरवार और प्रो. रमेश कोल ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया। प्रो. हेमलता एवं तुलसीरानी पटेल ने प्रशिक्षण के दौरान छात्राओं की जिज्ञासाओं का समाधाने किया। प्रतिभागी स्वयंसेवको में सुनील सराठे, प्रकाश असाटी, अंशिका मिश्रा, ईष्वरी सोनी, गणेश विष्वकर्मा और कमलेश राठौर प्रमुख हैं। शीघ्र ही सभी सक्रिय प्रतिभागियों को आकर्षक ई-प्रमाणपत्र प्राप्त होगा।आशा है कि इस प्रशिक्षण से जिले के हजारों युवा विद्यार्थी समुचित मार्गदर्शन प्राप्त कर लाभान्वित होंगे।

कोरोना से जंग • एक्सीलेंस गर्ल्स कॉलेज के स्वयंसेवक अपने-अपने क्षेत्र में कर रहे कोरोना के प्रति जागरूक

एनएसएस ने 4 शहरों और 24 गांवों में बांटे मास्क, किया दीवार लेखन

भास्कर संवाददाता | सागर

एक्सीलेंस गर्ल्स डिग्री कॉलेज की राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक लॉकडाउन के दौरान अपने-अपने शहरों के लोगों को जागरूक करने के लिए विभिन्न गतिविधियों का संचालन कर रहे हैं। चार शहरों और 24 गांवों में संचालित इन गतिविधियों के दौरान कोई छात्रा ग्रामीणों को मास्क बांट रही है तो कोई छात्रा दीवार लेखन कर लोगों को जागरूक कर रही है।

दरअसल प्राचार्य डॉ. बीडी अहिरवार के निर्देश पर रासेयो समन्वयक डॉ. भूपेन्द्र अहिरवार, कार्यक्रम अधिकारी डॉ. भावना रमैया, डॉ. अपर्णा चाचोंदिया ने कॉलेज की द्वितीय एवं तृतीय इकाई के एनएसएस स्वयंसेवकों का दल गठित किया था। स्वयंसेवक लॉकडाउन के दौरान कोरोना वायरस से संबंधित जानकारी, सुरक्षा एवं जागरूकता पर आधारित विभिन्न गतिविधियां संचालित कर रहे हैं। यह सिलसिला पिछले एक माह से चल रहा है। इस दौरान स्वयंसेवक छात्राओं ने कॉलेज परिसर में कोरोना वायरस से संबंधित स्वनिर्मित पोस्टर एवं स्लोगन चस्पा किए। ऑनलाइन फेस मास्क बनाने के वीडियो से प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने परिजनों, ग्रामीणों एवं अन्य लोगों को भी प्रशिक्षित करने के लिए वीडियो शेयर किया। लगभग 65 स्वयंसेवकों द्वारा घर पर फेस मास्क बनाए गए। आरोग्य सेतु एप प्रतिदिन अधिक से अधिक लोगों को शेयर किया व डाउनलोड करने के लिए प्रेरित किया। घरों की बाहरी दीवारों पर स्वनिर्मित पोस्टर, स्वरचित कविता, स्लोगन एवं गीत लिखकर जागरूकता लाने का प्रयास कर रहे हैं। अपने-अपने क्षेत्रों में सुरक्षा के सभी नियमों एवं सोशल डिस्टेंस का पालन करते हुए फेस मास्क का वितरण कर रहे हैं। एटीएम व दुकानों के बाहर कोरोना संक्रमण से सुरक्षा से संबंधित पोस्टर लगा रहे हैं। साथ ही उनके सामने गोले बनाकर सोशल डिस्टेंस की व्यवस्था कर रहे हैं।

कोरोना के प्रति लोगों को जागरूक करने एनसीसी कैडेट्स ने चलाया अभियान

सागर | एक्सीलेंस गर्ल्स डिग्री कॉलेज की एनसीसी कैडेट्स और एनएसएस की छात्राओं ने कॉलेज के मेन गेट पर छात्राओं को कोरोना वायरस संक्रमण से बचाव के लिए जरूरी एहतियात बरतने जागरूक किया। इसके अलावा वालेंटियर बनकर महाविद्यालय में परीक्षा होने के अलावा नहीं आने के लिए प्रेरित किया। ताकि एक साथ परिसर में भीड जमा न हो और संक्रमण से बचाव हो सके। इस अवसर प्राचार्य डॉ. बीडी अहिरवार ने छात्राओं से इस वायरस से भयभीत होने की अपेक्षा उसकी सुरक्षा एवं रोकथाम के उपाय अपनाने के लिए कहा।

लॉकडाउन का देश पर प्रभाव

पूजा अहिरवार, बी.एच.एस.सी., प्रथम वर्ष

लॉकडाउन से पहले के समय की बात करें तो उस वक्त हम सभी अपनी रोजमर्रा के कामों में इतना व्यस्त रहते थे कि अपनों के लिए अपने परिवार के लिए समाज के लिए अपने देश के लिए कभी समय ही नहीं निकाल पाते थे लेकिन लॉकडाउन लगने के बाद तो लोगों के परिवार के साथ बेहतरीन पल जीने को मिले हैं इस समय में कई लोगों ने समाज की सेवा भी की है।

लॉकडाउन का देश पर प्रभाव यह है कि लॉकडाउन के दौरान देश में प्रदूषण में कमी आई है। अगर लॉकडाउन से पहले की बात करें तो उस समय कारखानों से निकलने वाला कचरा जल में प्रवाहित कर दिया जाता था गाड़ियों के रास्तों पर दौड़ने से देश में ध्वनि और वायु प्रदूषण हो रहा था लेकिन लॉकडाउन की वजह से इन सभी चीजों में कमी आई है और आज चिड़ियों की चहचहाहट हमारे आंगन में वापस से सुनाई दे रही है जो कहीं खोसी गई थी नादियों का जल स्वच्छता की ओर अग्रसर हो रहा।

लॉकडाउन रहने से कोरोना वायरस के मरीजों में गिरावट आएगी और संक्रमण फैलने का खतरा कम होगा। हमारी रोजमर्रा की जिंदगी की चीजों जैसे फल, सब्जी, दवाईयां बाजार में उपलब्ध है लॉकडान से बड़े–बड़े कारखानों और वाहनों का चलना निषेध हो गया इससे एक अच्छी चीज हुई है जो है प्रदूषण में कमी कल–कारखाने का कचरा बाहर जल में प्रवाहित कर दिया जाता था एवं वायु ध्वनि और जल प्रदूषण में गिरावट आई है। जो प्रकृति की दृष्टि से लाभदायक है।

लॉकडाउन का देश पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है यही कारण है लॉकडाउन को बढ़ाया जा रहा है इसलिए हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम सरकार के इस निर्णय का पूर्ण समर्थन करते हमें लॉकडाउन का पूर्ण पालन करें और इस कोरोना वायरस को जड़ से मिटा दें सरकार द्वारा दिए गए निर्देशों का पूरी ईमानदारी के साथ पालन करना ही हमारा कर्तव्य है और आप सवयं के सकारात्मक दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित करते रहेगी तभी जीवन सुखमय व्यतीत हो गया और तभी हम सभी मिलकर इस महामारी को खत्म कर सकते हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना
National Service Scheme

कोविड-19 वायरस का संक्रमण

भारती अहिरवार, बी.कॉम., प्रथम वर्ष

प्रस्तावना

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कोरोना वायरस बहुत सूक्ष्म लेकिन प्रभावी कर दिया वायरस है। कोरोना वायरस मानव के बाल की तुलना में 900 गुना छोटा है, लेकिन कोरोना का संक्रमण दुनिया भर में तेजी से फैल रहा है। कोविड–19 क्या है ?

कोरोना वायरस (सीओवी) का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है। इस वायरस का संक्रमण दिसम्बर में चीन के वुहान में शुरू हुआ था डब्ल्यू.एच.ओ. के मुताबिक बुखार, खांसी लेने में तकलीफ इसके लक्षण है । अब तक इस वायरस को फैलाने से रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है।

इसके संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना और गले में खराश जैसी समस्याएं उत्पन्न होती है। यह वायर एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक फैलता है।

इसलिये इसे लेकर बहुत सारी सावधानियां बरती जारही हैं। यह वायरस दिसम्बर में आया था। इसके दूसरे देशों में पहुंच जाने की आशंका जताई जा रही है। कोरोना के मिलते–जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूंदों के जरिए फैलते हैं। कोरोना वायरस अब चीन में उतनी तीव्र गति से नहीं फैल रहा है जितना दुनिया के अन्य देशों में फैल रहा है। कोविड–19 नाम का यह वायरस अब तक 70 से ज्यादा देशों में फैल चुका है।

कोरोना के संक्रमण के बढ़ते खतरे को देखते हुए सावधानी बरतने की जरूरत है ताकि इसे फैलने से रोका जा सके।

कोरोना की सामाजिक चुनौतियाँ

कोरोना वायरस (कोविड–19) महामारी के वैश्विक प्रसार के साथ–साथ हर समाज की विसंगतियों भी सामने आ रही है। चाहे वह विकसित समाज हो या विकासशील समाज। वैश्विक स्तर पर संक्रमित लोगों की संख्या 1,56,000 को पार कर गई है। कोरोना वायरस हमें ऐसी चीजें बता रहा है, जिन्हें हम आमतौर पर स्वीकार नहीं करना चाहते।

यह हमें समृद्ध देशों में मौजूद असमानताओं को पहचानने के लिए भी बाध्य कर रहा है। लेकिन हाल ही में द टाइम पत्रिका में प्रकाशित एक लेख है ।

कोविड-19 और आर्थिक संकट

रोजगार पर कोरोना का प्रभाव

राष्ट्रीय सेवा योजना
National Service Scheme

कविता सेन, बी.एस.सी., प्रथम वर्ष

नोवेल कोरोना वायरस रोग (कोविड–19) के विश्वव्यापी प्रसार ने मानव जाति के सामने अब तक का सबसे बड़ा संकट साबित किया है। कोविड–19 महामारी ने एक आर्थिक रक्तपात की घोषणा की जहां व्यावहारिक रूप से दुनिया भर में सभी आर्थिक गतिविधियां बंद देखी जा रही है। वास्तव में यह स्वास्थ्य आपदा वैश्विक, आर्थिक संकट में बदल गई है, जो दुनिया भर में लाखों लोगों के स्वास्थ्य, नौकरी और आजीविका के लिए खतरा है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने अपनी रिपोर्ट आई.एल.ओ. मॉनिटर द्वितीय संस्करण कोविड– 19 और कार्य की दुनिया में कोविड–19 को द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सबसे खराब वैश्विक खतरे के रूप में वर्णित किया है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के प्रमुख, क्रिस्टालिना जॉर्जीवा ने कहा कि दुनिया 1930 के दशक की महामंदी के बाद सबसे खराब आर्थिक संकट का सामना कर रहा है। आई.एल.ओ. के अनुसार, महामारी के कारण दुनिया भर में लगभग 25 मिलियन नौकरियां जा सकती हैं। जिसका अर्थ होगा 860 बिलियन अमेरिका डॉलर आय का नुकसान।

दुनिया के सबसे गरीब और सबसे कमजोर लोग अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में कार्यरत हैं और उसमें आधे से अधिक लोग विकासशील देशों में कार्यरत रहते हैं। कोविड–19 महामारी ने भारतीय श्रम को तबाह कर दिया है, बाजार, रोजगार परिदृश्य में सेंध लगा रहा है और लाखों कार्यकर्ता और उसके परिवार आदितत्व के लिए खतरा है। आई.एल.ओ. की रिपोर्ट के अनुसार भारत से 40 करोड़ से अधिक अनौपचारिक कामगार गहरी गरीबी में धेकेले जा सकते हैं।

महामारी के कारण इन क्षेत्रों जैसे आतिथ्य और आवास खुदरा और थोक व्यापार सेवाओं, निर्माण और उद्योग को भारी नुकसान हुआ है। भारत जैसे विकासशील देशों में आमतौर पर जनसंख्या का बड़ा हिस्सा अनौपचिारक अर्थव्यवस्था पर निर्भर करता है। दूसरे शब्दों में, सामान्य रूप से विकास और विशेष रूप से विशाल आबादी की आजीविका और मजदूरी भारत में अधिकांश श्रमिक व्यवहारिता पर निर्भर करते हैं। आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पी.एल. एफ.एस.) के अनुसार, भारत में कामगारों का 90 प्रतिशत से अधिक हिस्सा अनौपचारिक श्रामिक है। जो लगभग 465 मिलियन की संख्या में है। इनमें से 419 मिलियन अनौपचारिक कर्मचारी 95 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में और 80 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में है। इसका मुख्य कारण शहरी क्षेत्र में केवल 8 प्रतिशत की तुलना में बड़ी संख्या में अनौपचारिक श्रमिक कृषि या कृषि गतिविधियां (62 प्रतिशत) में लगे हुए हैं। शहरी क्षेत्रों में लगभग 93 मिलियन अनौपचारिक कर्मचारी मुख्य रूपसे पांच क्षेत्रों अर्थात विनिर्माण, व्यापार, होटल और रेस्तरां निर्माण, परिवहन, भंडारण और संचार और वित्त, व्यापार और अचल सम्पत्ति में शामिल है इन क्षेत्रों में कुल 93 मिलियन अनौपचारिक श्रमिकों में से 50 प्रतिशत स्व– नियोजित हैं। 20 प्रतिशत दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी हैं और 30 प्रतिशत वेतन भोगी या संविदा कर्मचारी हैं। इस प्रकार अनौपचारिक कार्यकर्ता

ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में जो कोविड–19 के कारण सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। इसे वर्ग में प्रवासी, कृषि, श्रमिक,आकस्मिक / अनुबंध मजदूर, निर्माण श्रमिक, घरेलू कामगार, प्लम्बर पेंटर बढ़ई, वेंडर, गिग / प्लेटफार्म वक्र्र आदि शामिल है।

कोविड–19 महामारी के कारण संगठित श्रमिकों को आजीविका का नुकसान और नौकरी का खामियाजा भुगतना पड़ा है। भारतीय अर्थव्यवस्था निगरानी केन्द्र के आंकड़े के अनुसार 2020 में लगभग आधे औपचारिक वेतन भोगी / कर्मचारी अनौपचारिक रोजगार चले गए। आय के स्टॉक का बोझ प्रतिगामी था और इसके परिणाम स्वरूप असमानता में तीव्र वृद्धि हुई। नौकरी छूटने और वेतन में कटौती के कारण 2020 के दौरान 280 मिलियन उन व्यक्तियों की संख्या बढ़ी जो प्रस्तावित राष्ट्रीय जून 2020 से रोजगार और आय में ढील के बाद दोनों लॉकडाउन में ढील के बाद से आय में उछाल देखने के बाद लेकिन उसके बाद रिकवरी रूक गई। सी.एम.आई.ई. के आंकड़ों के मुताबिक लॉकडाउन के दौरान काम गंवाने, बेरोजगार परिवार आय उनके महामारी पूर्व स्तर से औसतन 12 प्रतिशत कम थी। कोविड– 19 महामारी की पहली और दूसरी दोनों लहरों के प्रभाव से निपटने के लिए भारत सरकार ने विभिन्न कदम उठाए हैं जिससे कई परियोजनाओं / कार्यक्रमों के माध्यम से देश में रोजगार पैदा होगा जैसे प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी), महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा), पं. दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्या योजना (डीडीयू–जीकेवाई) और दीनदयाल अंत्योदय योजना राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन मामलों के मंत्रालय शामिल हैं।

कैमरे की नज़र से
राष्ट्रीय सेवा योजना

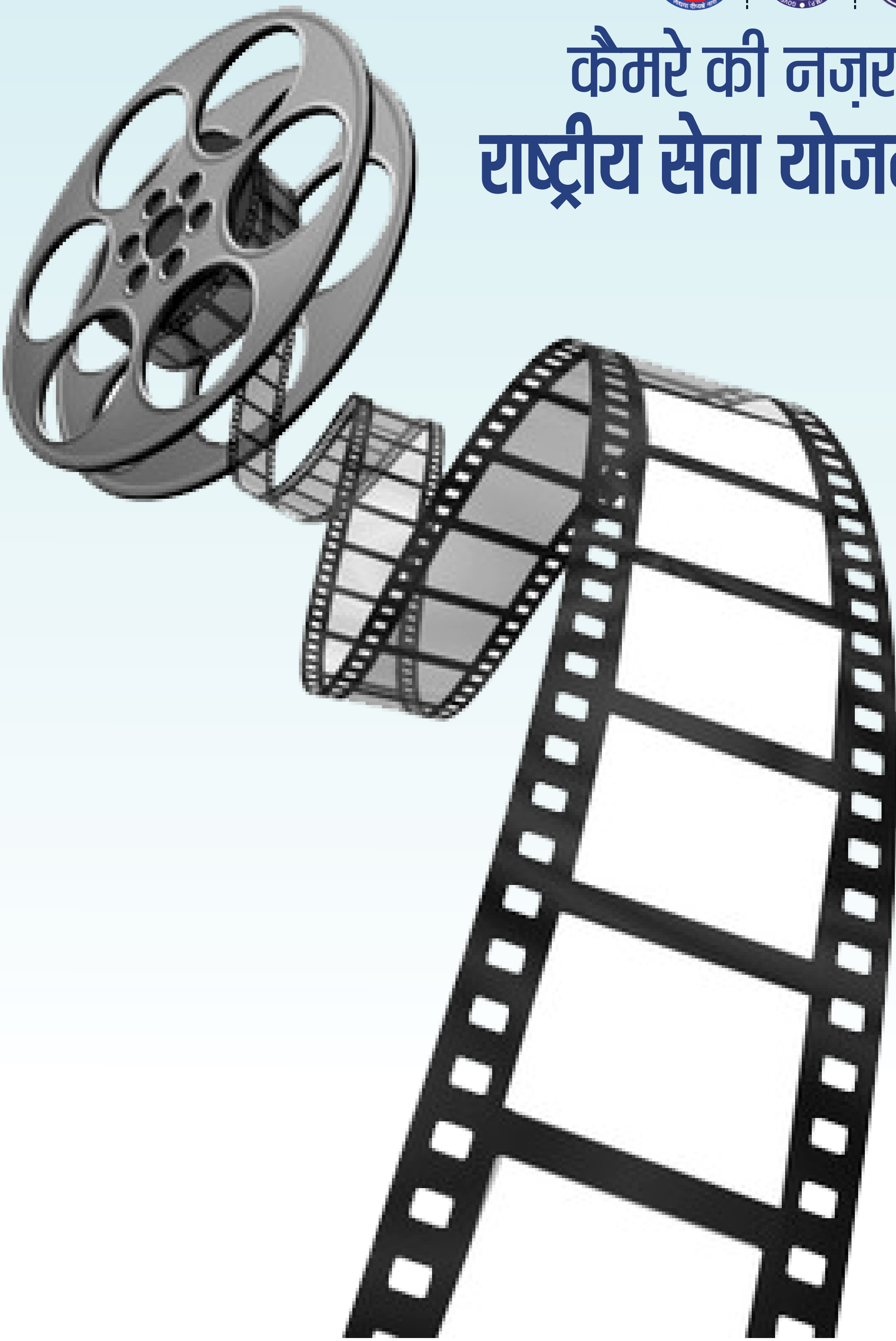

राष्ट्रीय सेवा योजना

National Service Scheme

राष्ट्रीय सेवा योजना
National Service Scheme

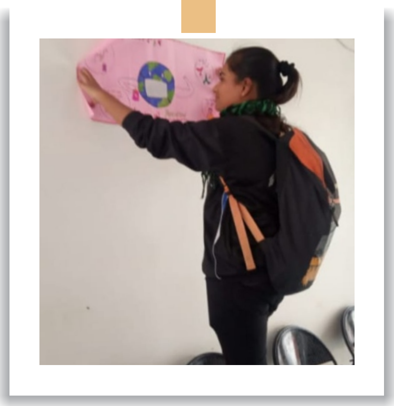

राष्ट्रीय सेवा योजना
National Service Scheme

राष्ट्रीय सेवा योजना
National Service Scheme

अनुलग्नक

Shubharambh Foundation
Helping Mankind

KAPIL SWAMI
DIRECTOR
YASH BIHAR COLONY, SHIVAJI WARD SAGAR (M.P.) 9893103996

सागर, दिनांक 20.05.2021

<u>vkHkkj&i=</u>

प्रति,

डॉ. अंजना नेमा
सह–प्राध्यापक गृहविज्ञान
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

आरदणीया,

यह आभार पत्र आपको प्रेषित है, कि आपने कोरोना काल में हमारे फाउण्डेशन को जो आर्थिक सहयोग राशि 5000/– (पाँच हजार रूपये) प्रेषित की, हम आपके कृतज्ञ हैं। इस राशि का उपयोग हमने अस्पताल में भर्ती मरीजों के परिजनों की भोजन व्यवस्था में किया। आपसे भविष्य में भी सहयोग का आकांक्षा के साथ।

Kapil

¼dfiy Lokeh½

KAPIL SWAMI
DIRECTOR
YASH BIHAR COLONY, SHIVAJI WARD SAGAR (M.P.) 9893103996

Shubharambh Foundation
Helping Mankind

सागर, दिनांक 23.05.2021

vkHkkj&i=

प्रति,

डॉ. अंजना चतुर्वेदी
प्राध्यापक अर्थशास्त्र
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

आरदणीया,

यह आभार पत्र आपको प्रेषित है, कि आपने कोरोना काल में हमारे फाउण्डेशन को जो आर्थिक सहयोग राशि 2500/– (दो हजार पाँच सौ रूपये) प्रेषित की, हम आपके कृतज्ञ हैं। इस राशि का उपयोग हमने अस्पताल में भर्ती मरीजों के परिजनों की भोजन व्यवस्था में किया। आपसे भविष्य में भी सहयोग का आकांक्षा के साथ।

¼dfiy Lokeh½

Shubharambh Foundation
Helping Mankind

KAPIL SWAMI
DIRECTOR
YASH BIHAR COLONY, SHIVAJI WARD SAGAR (M.P.) 9893103996

सागर, दिनांक 23.05.2021

vkHkkj&i=

प्रति,

डॉ. रश्मि दुबे
प्राध्यापक समाजशास्त्र
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

आरदणीया,

यह आभार पत्र आपको प्रेषित है, कि आपने कोरोना काल में हमारे फाउण्डेशन को जो आर्थिक सहयोग राशि 2500/- (दो हजार पाँच सौ रूपये) प्रेषित की, हम आपके कृतज्ञ हैं। इस राशि का उपयोग हमने अस्पताल में भर्ती मरीजों के परिजनों की भोजन व्यवस्था में किया। आपसे भविष्य में भी सहयोग का आकांक्षा के साथ।

¼dfiy Lokeh½

Letter of Gratitude

I am thankful to faculty members (staff club) of Govt. Autonomous Girls P.G. College of Excellence, Sagar for providing financial aid of Rs. 1,25,000/- (One Lakh Twenty Five Thousand) and support me & my family during crucial time of treatment of my child **Abhiditya Jain** who was suffering from Muscular Dystrophy disease.

(Animesh Jain)
Faculty
Department of Computer Application
Govt. Autonomous Girls P.G. College of
Excellence, Sagar (M.P.)

आभार–पत्र

मेरे पिताजी श्री कृष्ण कुमार सेन महाविद्यालय में दैनिक श्रमिक के रूप में कार्यरत थे उनका गंभीर बीमारी से दिनांक 20 अक्टूबर 2019 को निधन हो गया था। इस विषम परिस्थिति में शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय परिवार द्वारा मुझे 65,000/– (पैंसठ हजार रूपये) राशि का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। जिससे हमारे परिवार को इस परिस्थिति में उबरने में सहायता प्राप्त हुई, मैं और मेरा परिवार सदैव आभारी है कि महाविद्यालय ने मुझे मेरे पिता के स्थान पर दैनिक श्रमिक के रूप में कार्य करने का अवसर प्रदान किया।

कृतिका सेन

कृतिका सेन
दैनिक श्रमिक
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृ
ष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

आभार पत्र

मैं, डॉ. अंजना नेमा मेडम का आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे परिवहन की सुलभता हेतु साइकिल क्रय करने हेतु राशि 4600/– का भुगतान अग्रवाल साइकिल स्टोर मकरोनिया को दिनांक – 14.06.2022 को किया।

(निर्मल कोरी)
दैनिक श्रमिक

<u>आभार पत्र</u>

मैं, डॉ. अंजना नेमा मेडम का आभारी हूँ कि उन्होंने मेरी बिटिया के अध्ययन हेतु एक कम्प्यूटर डेस्कटॉप क्रय करने हेतु रु 8000/- (आठ हजार मात्र) एक कम्प्यूटर टेबल व चेयर प्रदाय की।

(चन्द्रशेखर सेन)
दैनिक श्रमिक